आरती – सत्यनारायणजी की

जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी जन पातक हरणा।। टेर।।
रतन जड़ित सिंहासन अद्भुत छविराजे।
नारद करत निरंजन घण्टा ध्वनि बाजे।। स्वामी जय ....
प्रगट भए कलिकारण द्विज को दरस दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बन के कंचन महल कियो।। स्वामी जय ....
दुर्बल भील कराल जिन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी विपदा हरी।। स्वामी जय ....
वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी।
सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर स्तुति कीनी।। स्वामी जय ....
भावभक्ति के कारण छिन–छिन रूप धरयो।
श्रद्धा धारण कीन्हीं तिनके काज सरयो।। स्वामी जय ....
ग्वाल बाल संग राजा वन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हों दीनदयालु हरि।। स्वामी जय ....
चढ़त प्रसाद सवायों कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से राजी सत्यदेवा।। स्वामी जय ....
श्री सत्यनारायण जी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी मनवांछित फल पावै।। स्वामी जय ....